मुक्ति-पर्व का गीत

(धरती न खून से कभी, फिर लहूलुहान हो
धुएँ से भरा फिर कभी, ना आसमान हो
उन संत-महात्माओं का, व्यर्थ ना बलिदान हो
इंसान अब इंसान बन, धरती की शान हो ॥)

सच्चाई की डगर पर, हर नौजवान हो -2
संसार के भले में सबका, योगदान हो-2
उन संत-महात्माओं का, पूरा विधान हो ॥ संसार के.....

उन संत-शहीदों ने, बलिदान दिया है,
पूरी मनुष्यता पर, अहसान किया है
अमूल्य धरोहर है, ये हमेशा ध्यान हो ॥ संसार के.....

जाति-धर्म के नाम पे, अब हो ना लड़ाई,
ईश्वर से हर एक चीज़ है, इंसान ने पाई
धरती पे बसनेवाले, बन्दे समान हों ॥

हर आदमी का इस जहाँ, आसान हो जीना,
नभ की तरह विशाल हो, इंसान का सीना
व्यवहार सबके हों मधुर, मीठी ज़बान हो ॥ संसार के.....

युगपुरूष के सपने को, साकार है होना,
सच्चाई की आवाज़ से, गूँजेगा हर कोना
घट-घट में ब्रह्मज्ञान का, ही अनुष्ठान हो ॥ संसार के.....

आवागमन के चक्र को, सदगुरू ने मिटाया,
बिछड़ी हुई इस आत्मा को, रब से मिलाया
जब तक रहें "कपिल", गुरू का यशोगान हो ॥ संसार के.....

तर्ज़ : हम लायें है तूफान से.....(जागृति)